|  |  |  |  |
| --- | --- | --- | --- |
| 03. Juli 2022 | | | |
| **14. Sonntag im Jahreskreis C** | | | |
| Erste Lesung: Jes 66,10-14c; Zweite Lesung: Gal 6,14-18; Evangelium: Lk 10,1-12.17-20 oder 10,1-9 | | | |
|  |  | |  |
| Eröffnung: | GL 81, 1+6 | | Lobet den Herren |
|  | GL 481, 1+4+5 | | Sonne der Gerechtigkeit |
|  |  | |  |
| Kyrie: | GL 163, 6 oder 7 | | Herr Jesus |
|  |  | |  |
| Gloria: | GL 170 | | Allein Gott in der Höh |
|  |  | |  |
| Antwortgesang: | Psalm 66, 1-7.16 u. 20 | |  |
|  | Kehrvers: | |  |
|  | GL 54, 1 | | Singt dem Herrn |
|  | GL 643, 3 | | Jubelt dem Herrn, alle Lande |
|  | Oder | |  |
|  | GL 144, 1+5+6 | | Nun jauchzt dem Herren |
|  |  | | |
| Halleluja-Ruf: | GL 174, 3 |  | |
|  | Vers: |  | |
|  | *In eurem Herzen herrsche der Friede Christi.* | | |
|  | *Das Wort Christi* | | |
|  | *wohne mit seinem ganzen Reichtum bei euch.* | | |
|  | oder |  | |
|  | GL 483, 1+2 | Halleluja. Ihr seid das Licht | |
|  |  |  | |
| Credo: | GL 491, 1-3! | Ich bin getauft | |
|  | GL 456 | Herr, du bist mein Leben | |
|  |  |  | |
| Gabenbereitung: | GL 146, 1-3! | Du rufst uns, Herr, an deinen Tisch | |
|  | GL 446, 1-4 | Lass uns in deinem Namen | |
|  | GL 477 | Gott ruft sein Volk zusammen | |
|  |  |  | |
| Sanctus: | GL 196 | Heilig | |
| Agnus Dei: | GL 204 | Christe, du Lamm Gottes | |
|  |  |  | |
| Danksagung: | GL 348, 3+4! | Du stille Macht | |
|  | GL 360, 5 | Die ihr von Christi Hause seid | |
|  |  |  | |
| Schluss: | GL 484, 1+6 | Dank sei dir, Vater | |
|  | GL 489, 1-3 | Lasst uns loben | |
|  | oder am Vorabend: |  | |
|  | Marienlied |  | |